स्टील को तपाकर कैसे मजबूत बनाया गया

(निकोलाई ओस्त्रोव्स्की के उपन्यास पर आधारित)

हिंदी: अरविन्द गुप्ता

How the Steel Was Tempered

(adapted from the novel by Nikolai Ostrovsky)

स्टील को तपाकर कैसे मजबूत बनाया गया

(निकोलाई ओस्त्रोव्स्की के उपन्यास पर आधारित)

हिंदी: अरविन्द गुप्ता

डिज़ाइन और चित्र: रुडोल्फ कार्कलिन

नोवोस्ती प्रेस एजेंसी पब्लिशिंग हाउस, मॉस्को, 1983

पिछले पचास वर्षों से भी अधिक समय से निकोलाई ओस्त्रोव्स्की का उपन्यास "स्टील को तपाकर कैसे मजबूत बनाया गया" ने पाठकों को प्रभावित किया है. उसने उन्हें साहस सिखाया है और बेहतर जीवन के लिए संघर्ष करने के लिए उनका आह्वान किया है. इस पुस्तक का कई भाषाओं में अनुवाद हुआ है और इसे मंच और फिल्म पर्दे पर भी दिखाया गया है. उपन्यास का नायक, पावेल कोरचागिन, उस युग का एक विशिष्ट युवक है जिसमें निकोलाई ओस्त्रोव्स्की स्वयं रहते और काम करते थे. यह उज्ज्वल आदर्शों और वीरता के लिए संघर्ष का समय था. 1917 में, रूस के मज़दूरों और किसानों ने कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में ज़ार को उखाड़ फेंकने, ज़मींदारों और पूँजीपतियों को बेदखल करने और सत्ता अपने हाथों में लेने के लिए आंदोलन किया था. एक नया राज्य अस्तित्व में आया: इसके मुखिया मज़दूरों की सोवियतें (परिषदें) थीं, जहाँ सभी लोग एक-समान थे और कोई शोषण नहीं था.

रूस के पूर्व शासक और पूँजीपति वर्ग इसे पचा नहीं पाए, और उनके सशस्त्र प्रतिरोध के कारण गृहयुद्ध छिड़ गया. पुरानी व्यवस्था के प्रति समर्पित अधिकारियों द्वारा संचालित रूसी सेना का एक हिस्सा नए गणराज्य के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ. नए समाज के विरोधी, सभी प्रकार के गठित गिरोहों से, नागरिक आबादी आतंकित हो गई थी. चौदह पूँजीवादी देशों ने गणराज्य की खिलाफत की, उसके बाद क्रांति के लाभों की रक्षा के लिए 1918 में मज़दूर और किसानों ने अपनी सेना - लाल सेना, स्थापित की.

निकोलाई ओस्त्रोव्स्की लाल सेना में तब शामिल हुए जब वह एक छोटे बालक थे. वह कई बार घायल हुए, लेकिन हमेशा युद्ध में दुबारा वापस लौटे. सिर में गंभीर चोट लगने के बाद ही उन्हें अपना सैनिक जीवन त्यागना पड़ा. इसके बाद उन्होंने कम्युनिस्ट युवा संगठन, कोम्सोमोल की एक नगर समिति के लिए काम किया. इस समय तक देश में युद्ध के घाव भरने लगे थे, और लोगों के बीच नए संबंधों के साथ एक नया जीवन निर्मित हो रहा था; इन सभी महान नई शुरुआतों में युवाओं की बहुत सक्रिय भूमिका थी. हालाँकि, कई वर्षों बाद, निकोलाई ओस्त्रोव्स्की का एक भयानक अंत हुआ. उनकी चोटों के कारण, उनके अंगों और दृष्टि ने काम करना बंद कर दिया. चौबीस वर्ष की आयु में वे अशक्त (पैरालाइज़) हो गए. उनके लिए जीने का मतलब लोगों के काम आना था, और अब उनके पास लेखन ही एकमात्र हथियार बचा था. इस प्रकार उन्होंने क्रांतिकारी संघर्ष की राह पर चल रहे युवाओं पर आधारित एक आत्मकथात्मक उपन्यास लिखा.

"हाउ द स्टील वाज़ टेम्पर्ड" पुस्तक 1932 में प्रकाशित हुई और तुरंत ही वो लाखों लोगों की पसंदीदा पुस्तक बन गई. उसके समापन पर, ओस्त्रोव्स्की ने एक नए उपन्यास, "चिल्ड्रेन ऑफ़ द स्टॉर्म" पर काम शुरू किया, लेकिन उसे पूरा करना उनके लिए संभव नहीं था. उन्होंने अपनी मृत्यु तक प्रतिदिन बारह घंटे उस नई पुस्तक पर काम किया.

निकोलाई ओस्त्रोव्स्की का दिसंबर 1936 में, बत्तीस वर्ष की आयु में निधन हो गया. उनकी किताबें, जो नई पीढ़ियों को नए कामों के लिए प्रेरित करती हैं, उन्हें अमर बनाती हैं. "कोई भी राष्ट्र ऐसे लोगों को नहीं भूलता. निकोलाई ओस्त्रोव्स्की का जीवन युवाओं के लिए एक उज्ज्वल प्रकाशस्तंभ की तरह काम करेगा," दुनिया के पहले अंतरिक्ष यात्री यूरी गगारिन ने उनके बारे में कहा था.

पावेल कोरचागिन बारह साल का था जब उसने पहली बार काम करना शुरू किया. उसे स्टेशन की कैंटीन के पिछले हिस्से की रसोई में, एक नौकरी मिल गई. वहाँ उसे एक महिला ने निर्देश दिया: "तुम्हारा काम सुबह बॉयलर को गर्म करना होगा—और ध्यान रखना कि वह हमेशा गर्म रहे. तुम्हें लकड़ी काटनी होगी, और वहाँ रखा समोवर भी तुम्हारा काम हैं. तुम्हें चाकू-काँटे साफ़ करने होंगे, और मैला ढोना होगा."

एक वेटर ने कहा: "और बेहतर होगा कि तुम यह सुनिश्चित करो कि समोवर हमेशा उबलते रहें. अगर वे नहीं उबलेंगे तो तुम्हारी अच्छी-खासी पिटाई होगी. समझे?" पावेल का कामकाजी जीवन शुरू हो गया था. ट्रे और बाल्टियाँ ढोते-ढोते जब वह थक जाता था, तब उसे बस गालियां ही मिलती थी.

जनवरी के एक ठंडे दिन, पावेल की शिफ्ट खत्म होने वाली थी, लेकिन उसे रिलीव करने वाला लड़का नहीं आया. चौबीस घंटे काम करने के बाद वो पहले से ही थका हुआ, लेकिन पावेल को एक और शिफ्ट के लिए रुकना पड़ा. रात तक वह पूरी तरह थक चुका था, फिर भी उसे बॉयलर भरना था और पानी गर्म करना था, जिससे वो सुबह 3 बजे वाली ट्रेन के लिए तैयारी कर सके. उसने नल खोला, लेकिन पानी नहीं था. गलती से वो नल बंद करना भूल गया और वहीं सो गया. कुछ मिनट बाद पानी बॉयलर में से बहने लगा, और जल्द ही वह वहां से बहकर फर्श पर आ गया. पानी दरवाज़े के नीचे से कैंटीन में रिसने लगा. उसके बाद पावेल को पीटा गया और नौकरी से निकाल दिया गया.

पावेल के बड़े भाई आर्टेम ने उसे बिजलीघर में नई नौकरी दिलवाई. उसी समय, ज़ार के तख्तापलट की खबर यूक्रेन के छोटे से कस्बे शेपेटोव्का में फैली, जहाँ वे रहते थे. सैकड़ों लोग बर्फ से भरी सड़कों से होते हुए शहर के चौक की ओर दौड़ पड़े. वे उत्सुकता से नए शब्दों को सुन रहे थे—स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व. उसी वर्ष बाद में, नवंबर की बरसात में, रेलवे स्टेशन पर कुछ नए प्रकार के लोग आने लगे. वे ज़्यादातर लोग प्रथम विश्व युद्ध की खाइयों से लौटे सैनिक थे और वे लोग "बोल्शेविक" के अजीबो-गरीब नाम से जाने जाते थे. 1918 के वसंत में, इस छापामार टुकड़ी ने शहर में प्रवेश किया.

जैसे ही जर्मन सेना, शेपेटोव्का की ओर बढ़ी, छापामारों को शहर छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा. टुकड़ी के कमांडर ने कहा: "हम तभी लड़ पाएँगे जब हम पीछे हट रही अन्य लाल टुकड़ियों के साथ मिलें. चूँकि हम सबसे आखिर में होंगे, इसलिए जर्मन सेना के पिछले हिस्से से निबटना हमारा काम होगा. इसलिए बिजलीघर में हमारा एक विश्वसनीय साथी होना ज़रूरी है. कृपा आप लोग कुछ नाम सुझाएं."

"नाविक फ़्योदोर ज़ुखराई," कमांडर के एक सहयोगी ने कहा. "पहली बात तो वो एक स्थानीय आदमी है. साथ में वो एक फ़िटर और मैकेनिक भी है और उसे पावरस्टेशन पर नौकरी मिल जाएगी. उसे हमारी टुकड़ी में किसी ने नहीं देखा है. वो बहुत समझदार है और वो यहाँ पर सब काम ठीक से करेगा."

अगले दिन शाम को जब पावेल घर पहुँचा तो आर्टेम एक अजनबी के साथ मेज़ पर बैठा था. "ये मेरा भाई फ़्योडोर है," आर्टेम ने अजनबी से कहा, जिसने पावेल की तरफ़ हाथ बढ़ाया.

"पावेल," आर्टेम ने कहा, "क्या तुमने यह नहीं कहा कि स्टेशन पर एक फ़िटर बीमार हो गया है? कल उनसे पूछ लेना कि क्या वो उसकी जगह किसी अन्य कुशल आदमी को रखेंगे."

"वे ज़रूर रखेंगे. मेरा बॉस किसी अन्य व्यक्ति की तलाश में था, लेकिन उसे कोई नहीं मिला."

"अच्छा, तो बात बन गई," अजनबी ने कहा. "कल मैं तुम्हारे साथ स्टेशन जाऊँगा और बॉस से खुद बात करूँगा."

जर्मन लोग शहर में ज़्यादा देर नहीं रुके. जल्द ही अतामान पेट्लुरा के दस्तों ने उन पर कब्ज़ा कर लिया. फिर लूटपाट, बलात्कार और हत्याएँ शुरू हुईं. पेट्लुरा के आदमियों ने फ्योडोर को पकड़ने की कोशिश की, लेकिन वह भागने में कामयाब रहा. वह कई दिनों तक कोरचागिन्स के घर में छिपा रहा, और इस दौरान उसने पावेल को बहुत कुछ समझाया. "तुम असल में क्या हो," पावेल ने एक बार उससे पूछा था, "या तो तुम बोल्शेविक हो या फिर कम्युनिस्ट." ज़ुखराई ने मज़ाक में अपनी छाती ठोंकी और वो ज़ोर से हँसा. "इसमें कोई शक नहीं है, मेरे दोस्त. यह सच बात है कि बोल्शेविक और कम्युनिस्ट दोनों एक ही हैं."

ज़ुखराई किसी ज़रूरी काम से पावेल के घर से निकला और वापस नहीं लौटा. कई दिनों बाद पावेल ने देखा कि नाविक ज़ुखराई को पेट्लुरा का एक आदमी संगीन की नोक पर ले जा रहा था. पावेल ने खुद को सिपाही पर फेंका, उसकी राइफल पकड़ी और उसे तेज़ी से एक तरफ़ घुमाई. सिपाही ने पावेल की मुट्ठी से राइफल तेज़ी से छीन ली. पावेल ने गिरते ही अपने साथ सिपाही को खींच लिया. ज़ुखराई तुरंत उनके पास पहुँच गया और उसने अपना मुक्का सिपाही के सिर पर दे मारा. सिपाही खाई में गिर पड़ा. ज़ुखराई और पावेल पास के प्लाट की बाड़ फांदकर भाग निकले.

उसी शाम पावेल को उसके घर से गिरफ़्तार किया गया और उसे कमांडेंट के पास ले जाया गया. उसने पाँच दिनों तक पावेल से पूछताछ की, लेकिन उसे कुछ भी पता नहीं चला. सिपाही ने पावेल को पहचान लिया और वो उसका गला घोंटने के लिए झपटा. वो लगभग उसका गला घोंटने ही वाला था. पावेल बस इतना ही कह पाया: "मुझे कुछ नहीं पता. मैंने कैदी को आज़ाद नहीं किया." कमांडेंट ने मुख्यालय से पावेल को गोली मारने की इजाज़त मांगी.

पावेल को बस संयोग ने मौत से बचा लिया गया. अतामान पेट्लुरा के एक करीबी सहयोगी, कर्नल चेर्न्याक ने उन तहखानों को देखने की माँग की जहाँ कैदियों को रखा जाता था. जब चेर्न्याक ने पावेल से पूछा कि उसे किस जुर्म में गिरफ़्तार किया गया है, तो उसने जवाब दिया: "हमारे घर पर दो कज़ाक सैनिक ठहरे हुए हैं. मैंने अपने जूते के तले के लिए उनकी पुरानी काठी से चमड़े का एक टुकड़ा काटा, और फिर कज़ाक मुझे यहाँ ले लाए."

कर्नल ने पावेल को घृणा से देखा और कहा: "अच्छा, अब तुम घर जा सकते हो, और अपने पिता से कहना कि वे तुम्हें वह पनाह दें जिसके तुम हकदार हो."

जब पावेल ने यह सुना तो उसे अपने कानों पर यकीन नहीं हुआ. वह दरवाज़े की ओर दौड़ा.
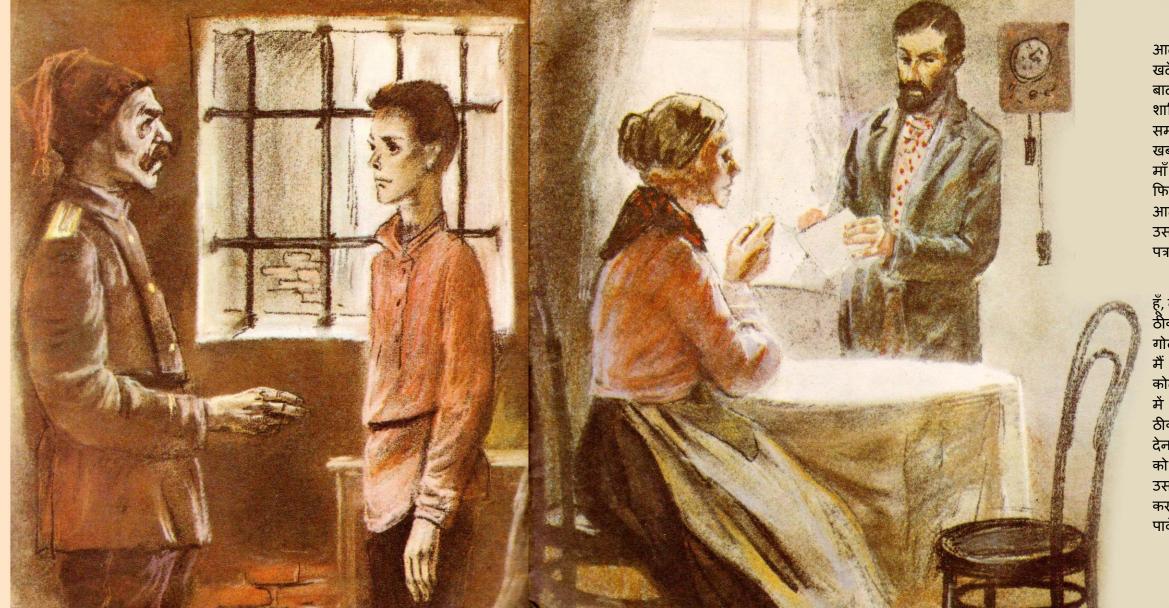
जब पेट्लुरा के आदमियों को शहर से खदेड़ दिया गया, उसके बाद पावेल लाल सेना में शामिल हो गया. लंबे समय तक उसने घर कोई खबर नहीं भेजी. उसकी माँ अक्सर रोती रहती थी. फिर एक शाम आर्टेम ने आते ही घोषणा की कि उसके पास पावेल का एक पत्र आया है.

"प्रिय आर्टेम, मैं ज़िंदा हूँ, लेकिन पूरी तरह से ठीक नहीं हूँ. मुझे कूल्हे में गोली लगी है, लेकिन अब मैं ठीक हो रहा हूँ. मैं कोटोव्स्की कैवलरी ब्रिगेड में सेवारत हूँ. क्या माँ ठीक हैं? उन्हें मेरा प्यार देना. मैंने आपको लोगों को जो भी चिंता दी है, उसके लिए मुझे माफ़ करना. आपका भाई पावेल."

पावेल एक साल से लड़ रहा था. अब वह एक मज़बूत सैनिक बन गया था. उस साल उसने कई भयानक घटनाएँ देखी थीं. हज़ारों अन्य लोगों के साथ, वह अपने लोगों को सत्ता में बनाए रखने के लिए लड़ रहा था. उस दौरान उसने केवल दो बार ही घाव या बीमारी के कारण लड़ाई छोड़ी थी.
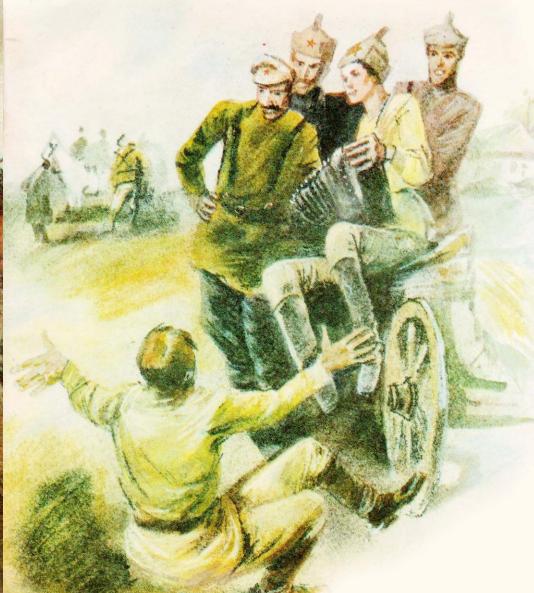
फिर पावेल का तबादला बुडायनी की पहली घुड़सवार सेना में हो गया. वे एक गाँव में दाखिल हुए, और वहाँ आराम करने लगे. वहां एक नौजवान एक मशीन-गन गाड़ी के पीछे बैठा अकॉर्डियन बजा रहा था. वह लय का ध्यान नहीं रख पा रहा था, और तेज़-तर्रार घुड़सवार नृत्य की लय में नहीं नाच पा रहा था.

पावेल गाड़ी की ओर बढ़ा. वादक ने संगीत बंद कर दिया और पूछा: "क्या चाहिए?" कोरचागिन ने वाद्य यंत्र लेने के लिए हाथ बढ़ाया और कहा: "मुझे बजाने दो." लड़के ने अनिश्चित भाव से अपने कंधे से पट्टा उतारा. पावेल ने आदतन अकॉर्डियन अपने घुटने पर रखा और बजाना शुरू कर दिया. उसके बाद एक पक्षी की तरह, नर्तक ने अपनी बाहें फैला दीं और चक्कर लगाने लगा. वो जटिल तरीके से अपने पैरों पर थिरकने लगा.

लाल सेना की घुड़सवार सेना, हस्तक्षेप करने वालों पर हमला कर रही थी. पावेल अपने घोड़े की गर्दन पर झुककर आगे बढ़ा. एक साथी घुड़सवार ने पावेल की आँखों के सामने एक दुश्मन को बेरहमी से मार गिराया. अचानक, एक चौराहे पर, घुड़सवारों ने नीली वर्दी पहने तीन आदमियों को एक मशीनगन पर झुके हुए देखा. कॉलर पर सुनहरी लट लगाए एक चौथे सिपाही, एक अधिकारी ने, हमलावर घुड़सवारों को देखा और अपनी माउजर बंदूक तैयार रखी. पावेल अपने घोड़े को रोक नहीं पाया और सीधे मशीनगन पर टूट पड़ा. अधिकारी ने गोली चला दी. गोली पावेल के गाल के पास से निकल गई. सरपट दौड़ते घोड़े ने अधिकारी को धक्का दे दिया. मशीनगन ने ज़ोरदार गोलीबारी की. पावेल का घोड़ा उछला और उसे सीधे दुश्मन सैनिकों के सामने ले गया.

एक दिन पावेल को सीलबंद लिफ़ाफ़े के साथ रेलवे स्टेशन भेजा गया.

वह इंजन के पास रुका और उसने पूछा: "कमांडर कौन है?" सिर से पैर तक चमड़े से ढका एक आदमी मुड़ा और बोला: "मैं हूँ." पावेल ने अपनी जेब से पैकेट निकाला और कहा: "आपके आदेश मेरे पास हैं. कृपा लिफ़ाफ़े पर हस्ताक्षर कर दीजिए."

इस बीच, इंजन के पहियों के पास कोई तेल के डिब्बे के साथ खड़ा था. "अच्छा, तुम हो," कमांडर ने पावेल को लिफ़ाफ़ा देते हुए कहा.

इंजन के पास खड़ा आदमी सीधा हुआ और वो घूमा. पावेल अपने घोड़े से कूद पड़ा: "आर्टेम, मेरे भाई!"

"पावेल, क्या वो सचमुच में तुम हो?" आर्टेम अपनी आँखों पर विश्वास न करते हुए चिल्लाया.

लवोव के पास लड़ाई में, घुड़सवार सेना के हमले के दौरान, पावेल की टोपी गिर गई. उसने अपने घोड़े की लगाम कसी. आगे की घुड़सवार सेना पहले ही दुश्मन की पंक्तियों से टकरा चुकी थी. अचानक एक सिपाही झाड़ियों से बाहर निकला और चिल्लाया: "डिवीजन कमांडर मारा गया!" पावेल पर क्रोध सवार हो गया और उसने खुद को लड़ाई के बीच में फैंक दिया. अपने कमांडिंग ऑफिसर की मौत से क्रोधित सैनिकों ने दुश्मन की पलटन का सफाया कर दिया. वे पीछे हटते दुश्मनों के पीछे खुले मैदान में दौड़े, लेकिन तोपखाने ने उन पर हमला कर दिया. पावेल की आँखों के सामने एक हरी लौ भड़क उठी और उसके कानों में गर्जना हुई. फिर वह अपने घोड़े के सिर के ऊपर से उछलकर ज़मीन पर ज़ोर से गिरा.

एक महीने तक पावेल फ़ील्ड अस्पताल में बेहोश पड़ा रहा. उसके सिर में एक बहुत गहरा घाव था और उसकी दाहिनी आँख की एक रक्त वाहिका फट गई थी. उसकी आँख सूज गई थी. डॉक्टर संक्रमण से बचाने के लिए उसे निकालना चाहता था. ऐसा करने से पावेल विकृत हो जाता इसलिए डॉक्टर वो न करने का फैसला किया.

पावेल ठीक हो गया. उसकी दाहिनी आँख अब अंधी थी, लेकिन वह देखने में सामान्य लगती थी. अस्पताल से निकलते हुए पावेल ने कहा: "काश वो मेरी बाईं आँख होती. अब मैं बंदूक कैसे संभालूँगा?"

अस्पताल से पावेल कीव गया. वहाँ सड़क पर उसने एक आदेश देखा जिस पर स्थानीय चेका के अध्यक्ष, फ्योदोर ज़ुखराई के हस्ताक्षर थे. चेका, प्रतिक्रांति से लड़ने के लिए गठित एक आधिकारिक संस्था थी. पावेल का दिल खुशी से उछल पड़ा. फ्योदोर, जिसने गृहयुद्ध के मोर्चे पर अपना एक हाथ गँवा दिया था. वो पावेल को देखकर बहुत खुश हुआ. पावेल सीधा काम पर लग गया. ज़ुखराई ने कहा, "जब तक तुम मोर्चे के लिए पर्याप्त ताकतवर नहीं हो जाते, तब तक तुम यहाँ प्रतिक्रांतिकारियों से निपटने में मेरी मदद करो. तुम कल से ही अपना काम शुरू करो."

लाल सेना क्रीमिया की ओर बढ़ रही थी ताकि वे आखिरी प्रतिक्रांतिकारी गढ़ को मिटा सकें. लाल सेना के सैनिकों से भरी रेलगाड़ियाँ दक्षिण की ओर जाते हुए कीव से गुज़र रही थीं; खुले मालगाड़ी के डिब्बे, गाड़ियों, रसोई घर के सामान और बंदूकों से लदे हुए थे. कीव में तार आने लगे कि अमुक डिवीजन के लिए लाइनें खाली कर दी जाएँ. चेका की परिवहन शाखा, जहाँ पावेल अब काम कर रहा था, का काम इस गड़बड़ी को सुलझाना था. यूनिट कमांडर उनके दफ़्तरों में घुसकर रिवॉल्वर लहराते और अपने आदमियों को तुरंत वहाँ से हटाने की माँग करते थे.

चेका के लिए काम करने का पावेल की तबियत पर असर पड़ा, जो पहले से ही खराब थी. दो रात बिना सोए रहने के बाद वह बेहोश हो गया. वह फ्योदोर के पास गया और बोला: "फ्योदोर, मैं रेलवे की वर्कशॉप में काम करना चाहता हूँ. मेरी सेहत अच्छी नहीं है. मेडिकल कमीशन ने मुझे सैन्य सेवा के लिए अयोग्य बताया है, लेकिन वो तो मोर्चे से भी बदतर है."

उसके बाद कोम्सोमोल की क्षेत्रीय समिति ने, पावेल को रेलवे वर्कशॉप में कोम्सोमोल समूह का सचिव बना दिया.

दिसंबर 1920 में पावेल अपने परिवार से मिलने शेपेटोव्का गया. पावेल को देखकर उसकी माँ ख़ुशी से रो पड़ी. उसकी आँखें एक बार फिर ख़ुशी से चमक उठीं. पावेल की ख़ुशी का तब ठिकाना नहीं रहा जब तीन दिन बाद आधी रात को, आर्टेम भी घर आ पहुँचा. पावेल ने घर पर सिर्फ़ दो हफ़्ते ही बिताए और फिर वो कीव लौट गया, जहाँ उसका बेसब्री से इंतज़ार हो रहा था.

एक और साल बीत गया. अब शहर पर तमाम नए दुश्मन सवार थे: रेलवे ठप होने के कारण ईंधन की बेहद कमी थी, जिसका मतलब था सर्दियों में भुखमरी और ठंड. सब कुछ जलाऊ लकड़ी और रोटी पर निर्भर था.

तेरह आदमी स्थानीय सोवियत अध्यक्ष के कार्यालय में एक नक्शे के पास बैठे थे.

"देखो," फ्योडोर ने कहा, "यहाँ रेलवे स्टेशन है, और वहां से छह किलोमीटर दूर कटी लकड़ी का बड़ा डिपो है. वहां जमा की गई दो लाख दस हज़ार घन मीटर जलाऊ लकड़ी को, हमें उन छह किलोमीटरों को पार करके स्टेशन तक पहुँचाना होगा. साथियों, उसका एक ही रास्ता है, और वह है अगले तीन महीनों में स्टेशन से लकड़ी के गोदाम तक एक नैरो-गेज रेल लाइन बनाना. इसके लिए साढ़े तीन सौ मज़दूर और दो इंजीनियर लगेंगे. उन सबके के रहने के लिए सिर्फ़ एक पुराना, बंद पड़ा स्कूल है. हमें मज़दूरों को सिर्फ दो-दो हफ़्ते के लिए, समूहों में भेजना होगा, क्योंकि वे इससे ज़्यादा मेहनत सहन नहीं कर पाएँगे."

रेलवे लाइन के लिए तटबंध बनाने के लिए लोग ज़ोर-शोर से खुदाई कर रहे थे. हल्की-हल्की बारिश हो रही थी. पुराने स्कूल का पत्थर का ढाँचा कमज़ोर और भयावह दिख रहा था. खिड़कियों और दरवाज़ों की जगह बड़े-बड़े छेद थे, और चूल्हे के दरवाज़ों पर काली दरारें थीं. चार बड़े कमरों में सिर्फ कंक्रीट का फर्श ही बचा था. रात के समय चार सौ आदमी गीले और कीचड़ से सने कपड़ों में उस पर सोने के लिए लेटते थे. गर्मी पाने के लिए वे एक-दूसरे से लिपटे रहते थे. उनके कपड़े सूखते नहीं थे. खिड़कियों के चौखटों पर टंगे बोरों से बारिश की बूँदें ज़मीन पर टपकती रहती थीं, और तेज़ हवा खुले दरवाज़ों से होकर अंदर आती थी. सुबह वे चाय पीते और उसके तुरंत बाद तटबंध पर काम करने चले जाते. हर दिन दोपहर के भोजन के समय वे उबली हुई दाल और साथ में कोयले जैसी काली रोटी खाते थे, जिससे उन्हें बहुत उबकाई आती थी.

बारिश रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी. पावेल ने बड़ी मुश्किल से अपना पैर गाढ़े कीचड़ से बाहर निकाला जिससे उसके जूते का सड़ा हुआ तला पूरी तरह से टूट गया. वह अपने जूते के बचे हुए हिस्से के साथ स्कूल की इमारत में गया. वह चूल्हे के पास बैठ गया और उसने अपने ठंडे और सुन्न पैरों को गर्मी की ओर बढ़ाया.

लाइनमैन की पत्नी ने उससे कहा: "देखो दोपहर का लंच जल्दी मिलने की उम्मीद मत रखना. मैं देख रही हूँ, बेटा, तुम काम से छुट्टी ले रहे हो. ज़रा देखो, तुम अपने पैर कहाँ रख रहे हो? यह रसोईघर है, कोई स्नानघर नहीं."

"मेरा जूता टूट गया है," पावेल ने कहा. उसके बाद महिला को अपने कठोर शब्दों पर शर्म आई: "मैंने तुम्हें आवारा समझा था." महिला ने पावेल के बूट की तरफ देखा. "उसकी मरम्मत करने से कोई फायदा नहीं होगा. मैं तुम्हें एक पुराना गैलोश और पैर में लपेटने के लिए कुछ मोटा कपड़ा दूँगी." पावेल ने चुपचाप महिला की तरफ कृतज्ञता भरी नज़रों से देखा.

लाइन बनाने का काम संभाल रहे बुज़ुर्ग टोकारेव, शहर से गुस्से में वापस लौटे. उन्होंने प्रमुख कम्युनिस्टों को अपने पास बुलाया और कहा: "मैं तुम्हें सच्चाई बताऊंगा, लड़कों. कुछ भी काम नहीं बना है. हम तुम्हारी जगह लेने के लिए कोई दूसरा समूह नहीं बना पाए हैं. अब कभी भी बर्फ जमने लगेगी लेकिन उससे पहले हमें किसी भी तरह दलदल को पार करना होगा. अगर हम ऐसा नहीं कर पाते हैं तो हम खुद को बोल्शेविक कहने का कोई हक नहीं है? हम आज एक बैठक करेंगे और सबके सामने स्थिति को स्पष्ट करेंगे. जिससे जो लोग पार्टी के सदस्य नहीं हैं, वे सुबह को अपने घर जा सकें, और हम लोग काम पर बने रहें."
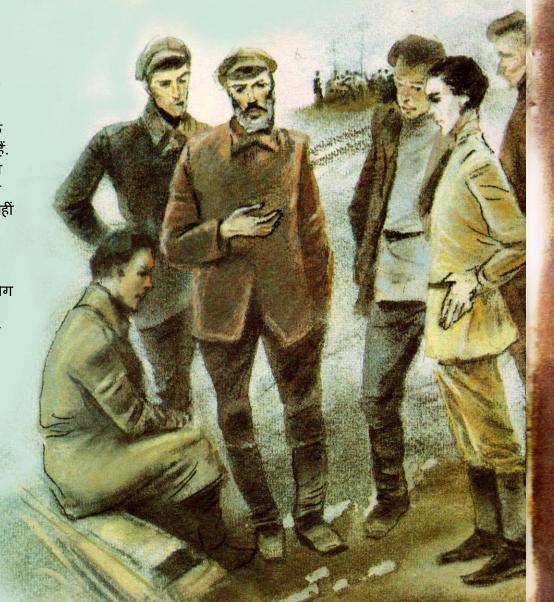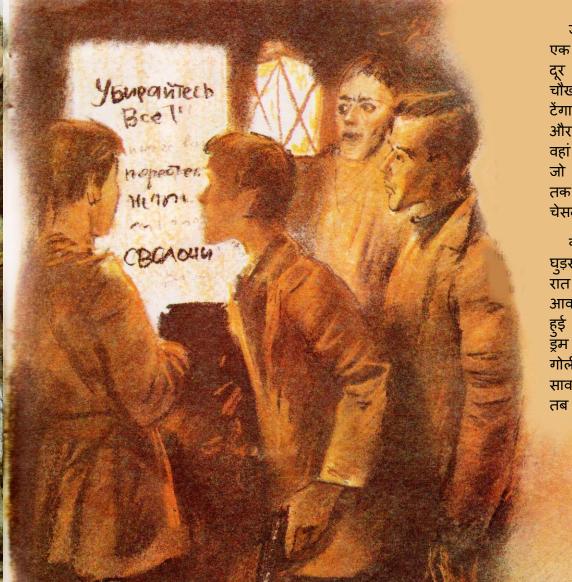
जंगल में गोली की आवाज़ आई. एक घोड़े पर सवार आदमी बैरक से दूर अँधेरे में सरपट भागा. दरवाज़े की चौखट में प्लाईवुड का एक टुकड़ा टंगा हुआ था. किसी ने माचिस जलाई और पढ़ा: "स्टेशन से निकलो और वहां वापस लौटो जहाँ से तुम आए थे. जो रुकेगा वो मारा जाएगा. कल रात तक निकल जाओ. अतामान चेसनोक."

कई दिनों बाद, लगभग एक दर्जन घुड़सवार अँधेरे में बैरक तक पहुँचे. रात के सन्नाटे में एक गोली की आवाज़ गूँजी. पावेल नीचे बैठा घबराई हुई उंगलियों से अपनी रिवॉल्वर के ड्रम में कारतूस गिन रहा था. फिर गोलीबारी रुक गई थी. पावेल ने सावधानी से दरवाज़ा खोला. लेकिन तब वहाँ कोई नहीं था.

दोपहर के समय शहर से एक ट्रॉली आई जिसमें क्षेत्रीय पार्टी समिति के सचिव फ्योदोर और अकीम थे. उनका स्वागत टोकरेव ने किया. "डाकुओं का हमला तो बस आधी मुसीबत है. रास्ते में एक खड़ा ढलान है. हमें बहुत सारी मिट्टी खोदनी पड़ेगी."

अकीम ने उससे पूछा: "क्या तुम समय पर लाइन पूरी कर पाओगे?"

"सच कहूँ तो, यह नामुमकिन है, लेकिन फिर भी हमें यह काम करना ही होगा. हम यहाँ दो महीने से हैं, और चौथी शिफ्ट का काम खत्म होने वाला है. मुख्य दल लगातार यहाँ लगा हुआ है, और सिर्फ़ उनका जोश और जवानी ही उन्हें आगे बढ़ा रही है. उन्हें देखो: वे सोने से ज़्यादा क़ीमत के हैं."

ज़ुखराई ने मेहनत से झुकी हुई पीठों को देखा और धीरे से कहा: "तुम सही कह रहे हो टोकरेव, वे लोग सोने से अधिक क़ीमती हैं. यहीं पर स्टील को तपा कर और कठोर बनाया जा रहा है."
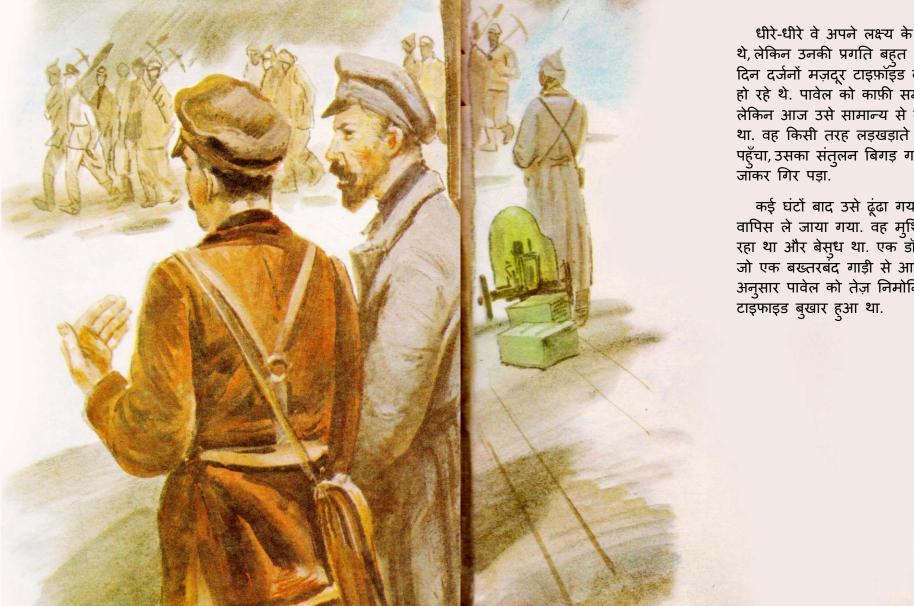
धीरे-धीरे वे अपने लक्ष्य के क़रीब पहुँच चुके थे, लेकिन उनकी प्रगति बहुत धीमी थी: हर दिन दर्जनों मज़दूर टाइफ़ॉइड बुखार से पीड़ित हो रहे थे. पावेल को काफ़ी समय से बुखार था, लेकिन आज उसे सामान्य से ज़्यादा ही बुखार था. वह किसी तरह लड़खड़ाते हुए स्टेशन तक पहुँचा, उसका संतुलन बिगड़ गया और वह वहां जाकर गिर पड़ा.

कई घंटों बाद उसे ढूंढा गया और बैरक में वापिस ले जाया गया. वह मुश्किल से साँस ले रहा था और बेसुध था. एक डॉक्टर के सहायक, जो एक बख्तरबंद गाड़ी से आया था के अनुसार पावेल को तेज़ निमोनिया और टाइफाइड बुखार हुआ था.

युवावस्था की जीत हुई, और पावेल की धीरे-धीरे फिर से ताकत वापिस आने लगी. स्वस्थ होते समय उसने काफ़ी समय पैदल चलने में बिताया, और एक दिन वह कब्रिस्तान में पहुँचा. वहाँ उसने सोचा: "किसी व्यक्ति के लिए जीवन से ज़्यादा कीमती कुछ नहीं होता. उसका जीवन उसे सिर्फ़ एक ही बार मिलता है. उसे अपना जीवन ऐसे जीना चाहिए कि उसे बर्बाद हुए वर्षों का कोई पछतावा न हो, अपने तुच्छ अतीत पर कोई शर्म न हो. उसे ऐसे जीना चाहिए कि अपनी मृत्यु पर वह छाती ठोक के कह सके: मैंने अपना सारा जीवन और सारी शक्ति दुनिया के सबसे बेहतरीन आदर्श, मानव जाति की स्वतंत्रता के लिए समर्पित की है. हमें जीवन को पूरे जोश से जीना चाहिए, जिससे कोई बेतुकी बीमारी या दुखद दुर्घटना जीवन को छोटा न कर सके."

पावेल, रेलवे वर्कशॉप में इलेक्ट्रीशियन के सहायक के रूप में काम पर लौटा. उसने ज़िला पार्टी समिति के सचिव को कुछ समय के लिए कोम्सोमोल नेतृत्व के काम से मुक्त करने के लिए मनाने की कोशिश की. "यहाँ हमारे पास लोग कम पड़ रहे हैं, और तुम वर्कशॉप में आराम फरमाना चाहते हो. मुझे मत बताओ कि तुम बीमार हो. मुझे बताओ कि असली वजह क्या है."

"एक वजह तो यह है कि मैं पढ़ना चाहता हूँ."

"अच्छा तो यह बात है. क्या तुम्हें लगता है कि मैं पढ़ना नहीं चाहता?"

लेकिन आखिर में सचिव ने पावेल की बात मान ली.

हर शाम पावेल देर रात तक पब्लिक लाइब्रेरी में बैठा रहता था. उसे सभी किताबें पलटने और पढ़ने की इजाज़त थी. ऊँची किताबों की अलमारियों के सहारे एक सीढ़ी लगाकर, पावेल घंटों किताबें पलटता रहता था और अपनी रुचि की चीज़ें ढूँढ़ता था.

एक दिन पावेल ने पार्टी में शामिल होने के लिए टोकारेव से एक सिफारिश पत्र माँगा. सिफारिश पत्र रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) का कोई पुराना और सीनियर सदस्य ही लिख सकता था. टोकारेव ने दृढ़ता से पत्र लिखा और अपने हस्ताक्षर किए.

"लो, मेरे बेटे. मुझे पता है कि तुम इस बूढ़े माथे पर कभी कलंक नहीं लगाओगे."

परिस्थितियों के कारण पावेल की भविष्य की योजनाएँ बदलीं.

सर्दी आने से ठीक पहले, तैरते हुए लट्ठों ने नदी को अवरुद्ध कर दिया था. शरद ऋतु की बाढ़ ने नदी के किनारों को तोड़ दिया था. उसके बाद जलाऊ लकड़ी नीचे की ओर बहने लगी. कीमती लकड़ी को बचाने के लिए कोम्सोमोल सदस्यों को भेजा गया. पावेल ने अपने साथियों को नहीं बताया कि उसे कड़ाके की सर्दी लग रही थी, और उससे एक हफ्ते बाद वह गंभीर रूप से बीमार पड़ गया. दो हफ्ते तक वह गठिया से पीड़ित रहा, और जब उसे अस्पताल से छुट्टी मिली, तो उसे काम करना बहुत मुश्किल लगने लगा.

कुछ दिनों बाद मेडिकल बोर्ड ने पावेल को काम के लिए अयोग्य घोषित कर दिया. उसे वेतन और साथ में विकलांगता भत्ता भी दिया गया, जिसे उसने लेने से मना कर दिया.
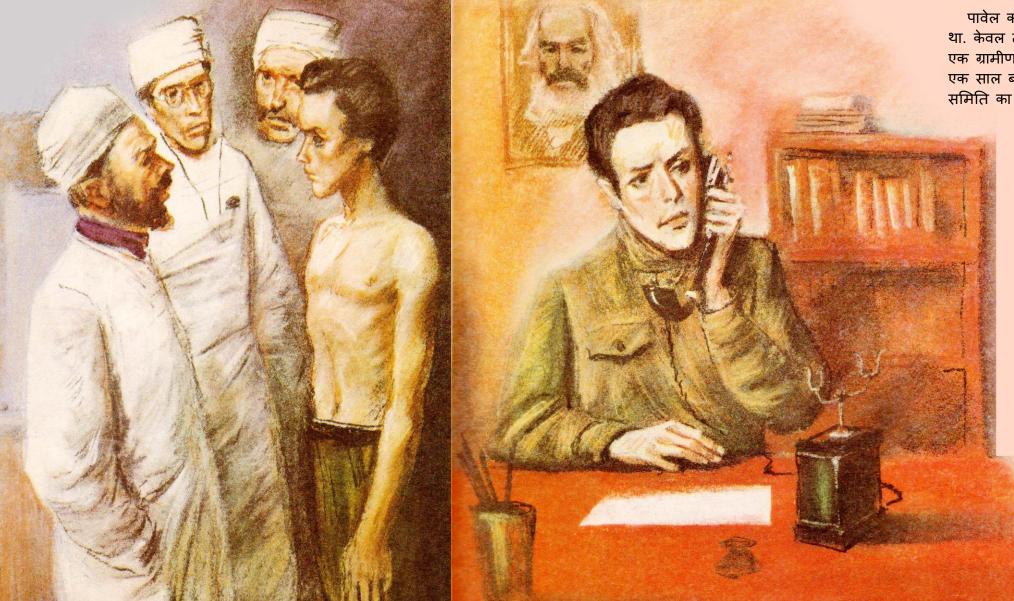
पावेल कोरचागिन को तोड़ना आसान नहीं था. केवल तीन हफ्ते बाद कोम्सोमोल ने उसे एक ग्रामीण जिले में एक मिशन पर भेजा, और एक साल बाद वह कोम्सोमोल की एक क्षेत्रीय समिति का सचिव चुना गया.

जब गर्मी आई, तो पावेल के दोस्त एक-एक करके छुट्टियों पर चले गए. उसने स्वास्थ्य रिसॉर्ट में अपने दोस्तों के रहने की जगह ढूँढ़ने में मदद की. जब दोस्त चले जाते, तो उसे अपने काम के साथ-साथ उनका भी काम करना पड़ता था. उसके दोस्त नई ऊर्जा और उत्साह से भरे हुए लौटते. उसके बाद फिर कुछ और दोस्त चले जाते. पूरी गर्मी कोई न कोई बाहर रहता. लेकिन पावेल काम से एक दिन की भी छुट्टी नहीं ले पाता था. इस तरह गर्मियाँ बीत गईं; पावेल को पतझड़ और सर्दी बिलकुल पसंद नहीं थी, क्योंकि ये मौसम उसे बहुत शारीरिक कष्ट देते थे.

पावेल खुद यह स्वीकार नहीं कर पा रहा था कि वह साल-दर-साल कमज़ोर होता जा रहा था. वह दो ही विकल्प चुन सकता था: या तो वो खुद को अपाहिज घोषित कर दे, या फिर जब तक हो सके वो अपने पद पर बना रहे. पावेल ने दूसरा रास्ता चुना. एक दिन डॉक्टर ने उससे कहा: "कोरचागिन, तुम ठीक नहीं लग रहे हो. बेहतर होगा कि तुम अपनी पूरी जाँच करवा लो."

चिकित्सा आयोग ने भी पावेल को "तुरंत छुट्टी, लंबे इलाज और उसके बाद गहन उपचार की सिफ़ारिश की. अन्यथा गंभीर परिणाम होने की सम्भावन थी."
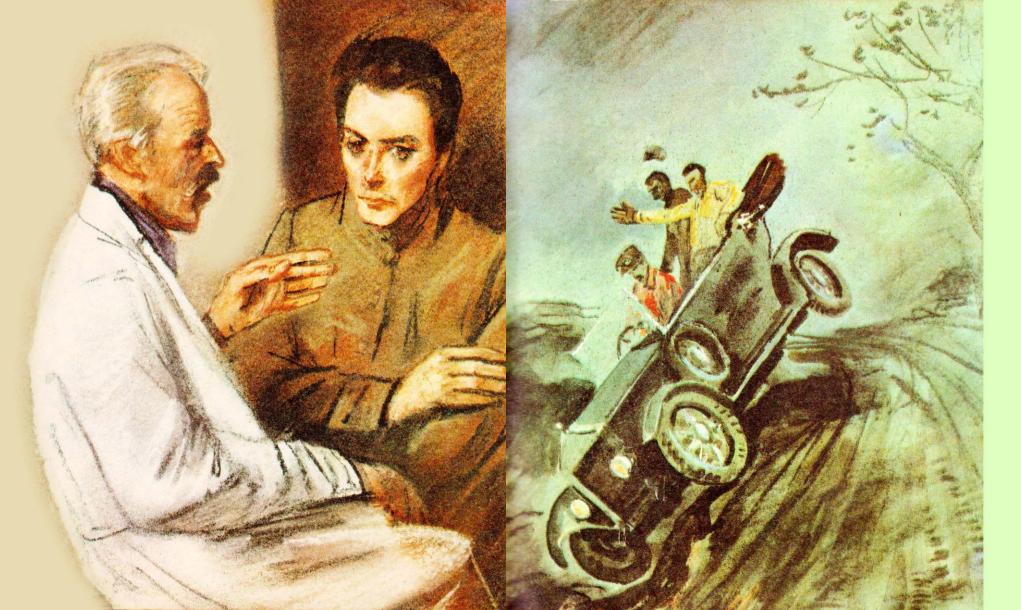
पावेल ने सेनेटोरियम में केवल एक सप्ताह बिताया. वह वहां और अधिक नहीं रह सका और इलाज पूरा कराए बिना ही चला गया. लौटने पर उसे एक नया कार्यभार सौंपा गया. उस पतझड़ में, जिस कार में पावेल यात्रा कर रहा था, वह फिसलकर खाई में गिर गई और पलट गई.

पावेल ने आर्टेम को लिखा: "चोटों ने मुझे फिर से मेरे काम से दूर कर दिया है. मुझे एक नई उपाधि मिली है "अक्षम' की. मुझे बहुत दर्द हो रहा है और इसका नतीजा यह है कि मेरे दाहिने घुटने में हरकत बंद हो गई है, मेरे शरीर पर कई टाँके लगे हैं और हाल ही में एक मेडिकल रिपोर्ट के अनुसार सात साल पहले मेरी रीढ़ की हड्डी में जो चोट लगी थी उसकी मुझे भारी कीमत चुकानी पड़ सकती है. मैं कुछ भी सहने को तैयार हूँ, बशर्ते मुझे फिर से लड़ने का मौका मिले. कल मैं एक दूसरे सेनेटोरियम जा रहा हूँ. अपना हौसला बनाए रखना. पावेल."
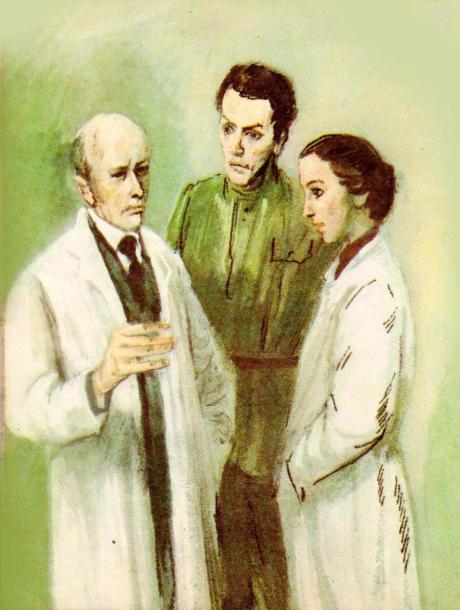
जब डॉक्टर इरिना बाज़ानोवा ने पावेल को अस्पताल से छुट्टी दी, तो उन्होंने सुझाव दिया कि पावेल उनके पिता, जो एक प्रसिद्ध सर्जन थे, से सलाह ले. पावेल तुरंत मान गया. अनुभवी और वृद्ध डॉक्टर ने अपनी बेटी की मौजूदगी में पावेल की जाँच की, और उन्होंने जो भी पाया उसे बताने का काम उन्होंने अपनी बेटी पर छोड़ दिया:

"इस युवक को लकवा मार सकता है और हम इस त्रासदी को टालने में असमर्थ हैं."

इरीना, पावेल को सब कुछ बताने की हिम्मत नहीं जुटा पाई. उन्होंने सोच-समझकर चुने हुए शब्दों में पावेल को सच्चाई का सिर्फ एक छोटा सा हिस्सा ही बताया.

एक सेनेटोरियम में लंबे इलाज के बाद पावेल खार्कोव गए, जहाँ वे सीधे पार्टी केंद्रीय समिति में अकीम के पास पहुंचे. पावेल ने तुरंत काम दिए जाने की माँग की. "मैं तुम्हें काम नहीं दे सकता, पावेल. हमें केंद्रीय समिति के मेडिकल बोर्ड से एक आदेश मिला है जिसमें लिखा है: "कोरचागिन की गंभीर हालत को देखते हुए उन्हें तुरंत इलाज के लिए भेजा जाना है. उसकी काम पर वापसी असंभव है.'"

"अकीम, जब तक मेरा दिल धड़कता रहेगा, मुझे पार्टी से कोई छीन नहीं सकता है."

अकीम जानता था कि ये खोखले शब्द नहीं थे, बल्कि वो गंभीर रूप से एक घायल सैनिक की आत्मा की पुकार थी. दो दिन बाद उसने पावेल से कहा कि अगर वह एक पत्रकार के रूप में अपनी योग्यता साबित कर पाए, तो वह एक अखबार में काम कर सकता था.
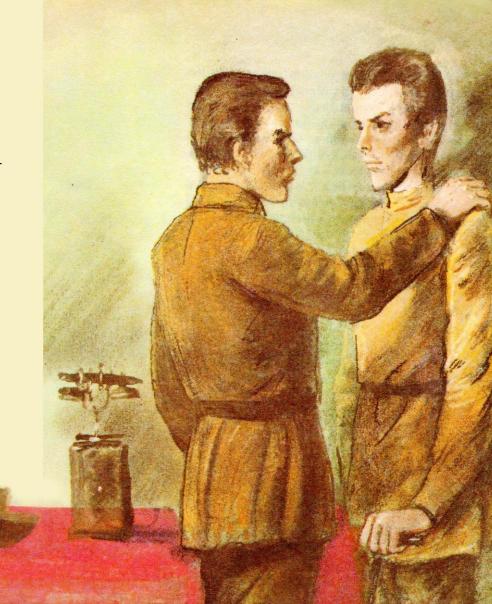
पावेल का संपादकीय कार्यालय में गर्मजोशी से स्वागत किया गया. उप-संपादक, जो एक पूर्व भूमिगत कार्यकर्ता थे, ने कहा: "हम आपको घर पर ले जाने के लिए काम दे पाएँगे और हम आपके लिए उपयुक्त परिस्थितियाँ भी उपलब्ध कराएँगे. लेकिन उसके लिए आपको कई विषयों, खासकर साहित्य और भाषा, का अच्छा ज्ञान होना चाहिए."

महिला ने पावेल का लिखा लेख पढ़ा और फिर आह भरी: "कॉमरेड कोरचागिन, थोड़ी मेहनत के बाद आप शायद किसी दिन एक अच्छे लेखक बन पाएं. लेकिन मुझे डर है कि इस समय हम आपका इस्तेमाल नहीं कर पाएँगे."

उस दिन से पावेल का जीवन मानो ढलता गया. काम का तो सवाल ही नहीं उठता था.

"अगर मैंने अपनी सबसे कीमती चीज़, लड़ने की क्षमता, खो दी है, तो जीने के लिए फिर बचा ही क्या?" पावेल ने सोचा, "क्या मुझे किनारे पर बैठना होगा जबकि मेरे साथी आगे बढ़ते रहेंगे? क्या मुझे बोझ बनना होगा? मेरे सीने में एक गोली मेरे सब दुखों को खत्म कर देगी."

उसने धीरे से अपनी रिवॉल्वर निकाली. "किसने सोचा था कि तुम ऐसी नौबत तक पहुँचोगे?" फिर पावेल ने रिवॉल्वर एक तरफ रख दी. "अपनी जान लेना सबसे आसान और सबसे कायरतापूर्ण तरीका होगा. ज़िंदगी असहनीय होने पर भी मुझे जीना सीखना होगा. मुझे अपने जीवन को उपयोगी बनाना होगा."
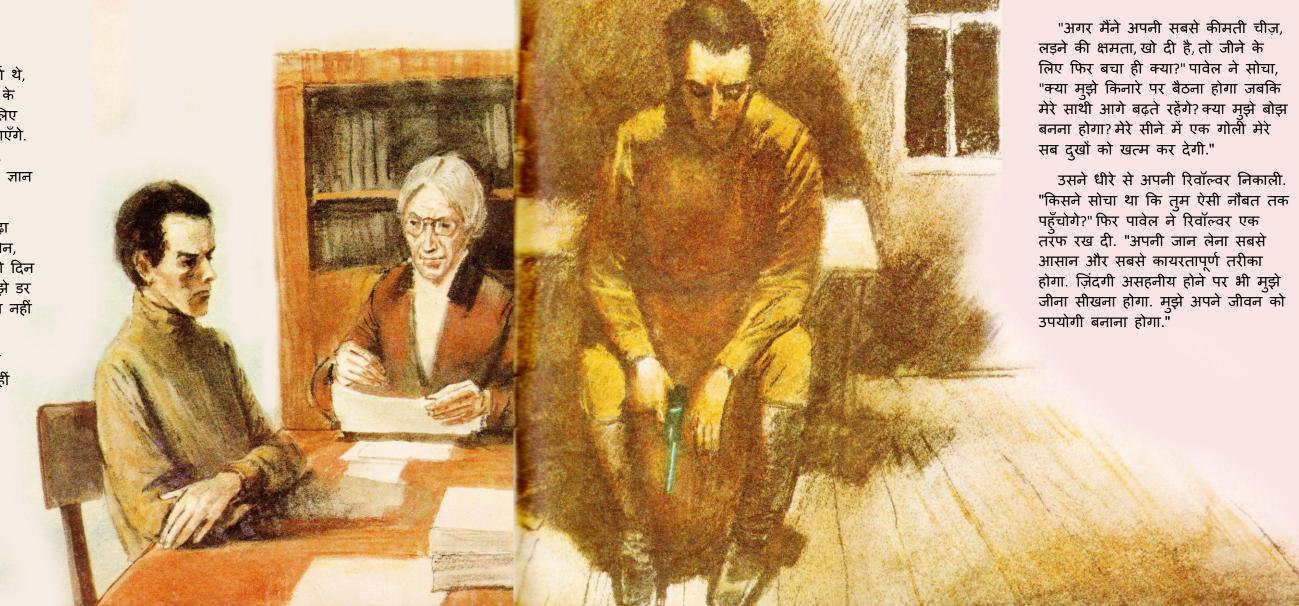
आर्टेम को अपने भाई से बहुत कम ही पत्र मिलते थे, लेकिन जानी-पहचानी लिखावट वाला लिफ़ाफ़ा देखकर उसकी शांति भंग हो गई.

"हालात बद-से-बदतर होते जा रहे हैं," पावेल ने लिखा. "मैं अब अपना बायाँ हाथ इस्तेमाल नहीं कर सकता हूं. शुरुआत में तो यह काफी बुरा था, लेकिन अब मेरे पैरों ने भी मेरा साथ छोड़ दिया है, और मैं बिस्तर से मेज़ तक बड़ी मुश्किल से चल पाता हूँ. कौन जाने आने वाला कल मेरे लिए क्या लेकर आएगा?"

"मेरा जीवन पढ़ाई के लिए समर्पित है. किताबें, किताबें और और अधिक किताबें. मैंने सभी क्लासिक्स पढ़ डाली हैं और विश्वविद्यालय के पत्राचार पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष की परीक्षाएँ भी पास कर ली हैं."

फिर पावेल के पैर पूरी तरह से लकवाग्रस्त हो गए. अब केवल उसका दाहिना हाथ ही उसकी बात मानता था. जल्द ही असहनीय दर्द ने उसकी दाहिनी आँख को और फिर बाईं आँख को भी जकड़ लिया. कई दिनों बाद उसने पार्टी ज़िला समिति के सचिव को पत्र लिखकर उनसे मिलने आने का अनुरोध किया. सचिव ने पावेल के साथ दो घंटे बिताए. "मुझे लोगों की ज़रूरत है, असली ज़िंदा लोगों की. अब पहले से कहीं ज़्यादा. मुझे कुछ युवा लोगों को साथ रहने दो."

"छोड़ो," सचिव ने कहा. "तुम्हें आराम करने की ज़रूरत है और फिर देखना होगा कि तुम्हारी आँखों का क्या इलाज हो सकता है. शायद अभी भी कुछ किया जा सके."

पावेल ने सचिव को मना लिया और शाम को उसके घर में की आवाज़ें गूंजने लगी.
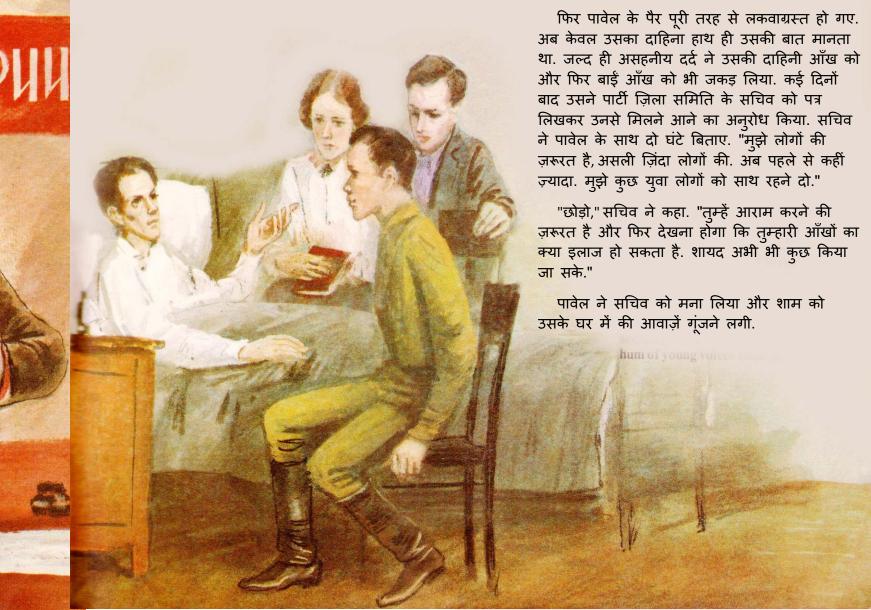
इरीना बाज़ानोवा, जो उस इलाके में एक कामकाजी दौरे पर थीं, पावेल से मिलने आईं. पावेल ने उन्हें बताया कि वह काम पर वापस कैसे लौटने की योजना बना रहा था.

"लेकिन तुम कैसे लिखोगे?" इरीना ने पूछा.

"कल मेरे लिए एक कार्डबोर्ड स्टेंसिल आएगा. अब मैं उसके बिना लिख नहीं सकता. मैं लंबे समय तक उसे समझ नहीं पाया, लेकिन अब मैं उससे काफी अच्छा लिख सकता हूँ."

पावेल ने कोटोव्स्की की घुड़सवार सेना ब्रिगेड के वीरतापूर्ण कारनामों पर एक उपन्यास लिखने का फैसला किया. शीर्षक उसने खुद ही तय किया: "तूफान के बच्चे". उस दिन से पावेल का पूरा जीवन इस किताब को लिखने में लग गया.

पावेल को जो कुछ भी लिखना था, उसे वो शब्द-दर-शब्द याद रखना पड़ता था. किसी भी तरह का सूत्र छूट जाने से उनका काम धीमा पड़ जाता था. पावेल की माँ अपने बेटे की गतिविधियों से स्तब्ध थीं. कभी-कभी पावेल पूरे पन्ने या अध्याय भी याद से सुनाता था, तब उसकी माँ सोचती - कि क्या उसके बेटे का दिमाग खराब हो गया है. लिखते समय वह पावेल को परेशान करना पसंद नहीं करती थीं, लेकिन फर्श पर गिरे पन्ने उठाते हुए वो कहती थीं: "पावेल, तुम कुछ और क्यों नहीं करते?

युवती गैल्या, पावेल के काम में मदद करने आई. पावेल बोलता और वो उसे लिखती थी. इससे उसकी किताब दुगुनी गति से आगे बढ़ी. जब पावेल सोच में डूब जाता, तो उसकी पलकें झपकतीं और उसकी आँखों का रंग बदल जाता, तो गैल्या को यकीन नहीं होता था कि पावेल देख नहीं सकता था. दिन के अंत में, वह जो कुछ भी लिख कर ले जाती, वो उसे दोबारा पढ़ती और पावेल को ध्यान से सुनते हुए भौंहें चढ़ाते हुए भी देखती.

"तुम किस बात पर भौंहें चढ़ा रहे हो? यह बहुत अच्छा है."

"नहीं, यह अच्छा नहीं है, गैल्या."

वह खुद सब कुछ फिर से लिखता जिससे वह खुश नहीं होता था. कभी-कभी वो धैर्य खोकर हार मान लेता था. अपनी दृष्टि खो जाने के कारण जीवन पर असीम क्रोध में वह तब अपनी पेंसिल तोड़ देता, और अपने होंठों को तब तक काटता जब तक कि उनमें से खून नहीं निकल आता.

अब आखिरी अध्याय भी पूरा हो गया था. कई दिनों तक गैल्या, पावेल को उसका उपन्यास पढ़कर सुनाती रही. अगले दिन पांडुलिपि लेनिनग्राद भेज दी गई. किताब का भाग्य, पावेल के खुद के भाग्य का फैसला करता. अगर किताब पूरी तरह से अस्वीकृत होती तो उसका मतलब पावेल के जीवन का अंत होता. अगर असफलता आंशिक होती और आगे काम करके कमियों को दूर किया जा सकता, तो पावेल तुरंत नए सिरे से काम शुरू कर देता.

पावेल की माँ भारी पैकेट डाकघर लेकर गईं. उसके बाद पीड़ादायक प्रतीक्षा के दिन शुरू हुए. पावेल सुबह-शाम डाक के इंतज़ार के लिए जीता था, लेकिन लेनिनग्राद से कुछ नहीं आया.
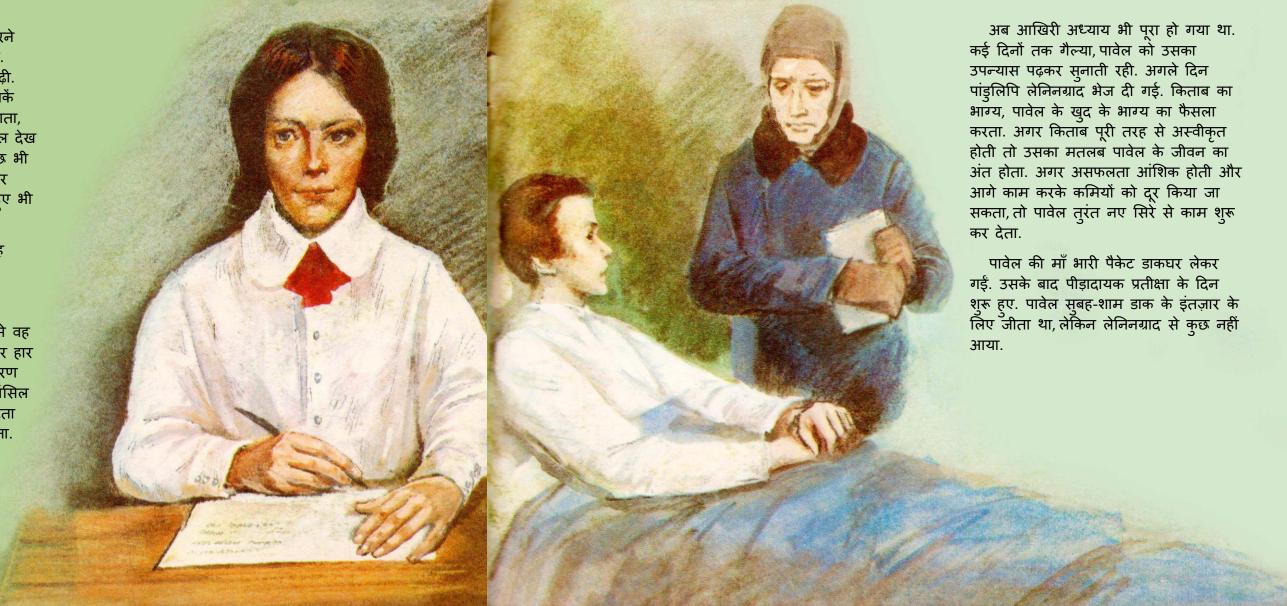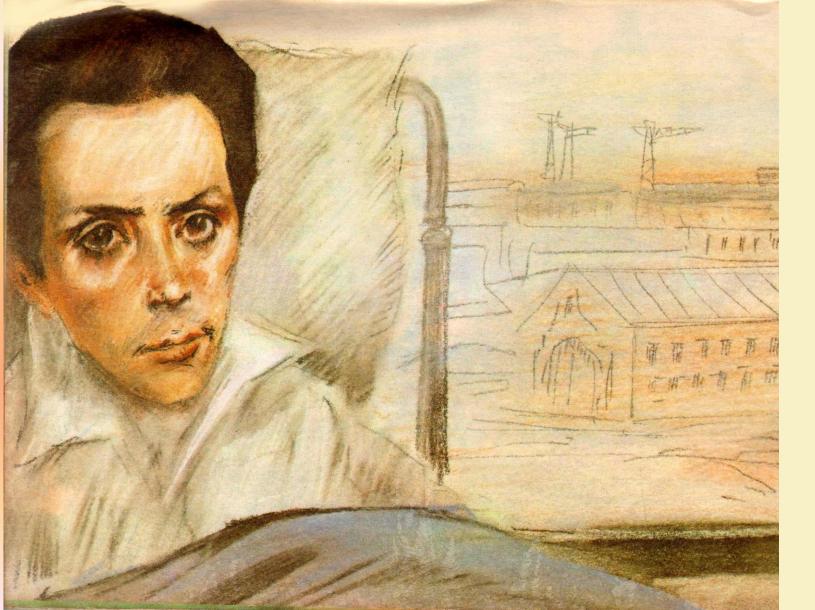
चुप्पी इतनी लंबी थी कि वो पावेल को अशुभ लगने लगा था. पावेल को लगा कि अस्वीकृति उसका अंत कर देगी. ऐसे क्षणों में वह बार-बार खुद से पूछता कि क्या उसने दबाव से बाहर निकलने, लड़ाई में लौटने और अपने जीवन को उपयोगी बनाने के लिए वह सब कुछ किया है जो वह कर सकता था. उसे लगा कि उसने वो सब किया था.

कई दिनों बाद, जब सस्पेंस पावेल के लिए लगभग असहनीय हो गया तो उसकी माँ कमरे में आईं और चिल्लाईं: "लेनिनग्राद से एक तार आया है!" उसमें लिखा था: "उपन्यास तहे दिल से स्वीकृत. प्रकाशन शुरू हो गया है. आपको सफलता के लिए बधाई."

पावेल का दिल तेज़ी से धड़कने लगा. उसका मनचाहा सपना सच हो गया था. उसपर बना दबाव अब टूट गया था, और एक बार फिर, एक नए हथियार से लैस होकर, वह लड़ाई और जीवन जीने की ओर लौट रहा था.